धर्म के लक्षण या तत्व
(Characteristics or elements of DHARAM)

धर्म के लक्षण या तत्व निम्नलिखित है :—

(1) अध्यात्मिक शक्ति में विश्वास (Belief in Spiritual Being) :— विश्वास धर्म का सर्वाधिक महत्वपूर्ण लक्षण है। धर्म में यह विश्वास अध्यात्मिक शक्ति के सन्दर्भ में होता है। यह शक्ति मानवीय शक्ति से काफी श्रेष्ठ तथा शक्तिशाली होता है। सामान्यतया व्यक्तियों में ऐसा विश्वास होता है कि अध्यात्मिक शक्ति इतनी अधिक सर्वव्यापी और अतिमानवीय होती है कि इनकी इच्छा से ही कल्याण संभव है।

(2) कर्मकाण्ड (Rituals) :— धर्म सदा कर्मकाण्ड से जुड़ा होता है। यह कर्मकाण्ड सभी धर्मों में देखे जाते हैं। कर्मकाण्ड का तात्पर्य उन क्रियाओं से है जिनके द्वारा अध्यात्मिक शक्ति के प्रति विश्वास प्रकट किया जाता है। उदाहरणस्वरूप – हिन्दू धर्म में व्रत, कथाएँ एवं विभिन्न अवसरों पर किए जानेवाले क्रियाकलाप।

(3) प्रतीक और पौराणिक कथाएँ एवं गाथाएँ (Symbols and Myths) :— धर्म का एक महत्वपूर्ण लक्षण प्रतीक और पौराणिक गाथाओं के रूप में है। हिन्दू धर्म में मूर्ती एक प्रतीक है। आस्था और विश्वास के कारण उस मूर्ती के प्रति हमारा ध्यान केन्द्रित होता है, साथ ही पौराणिक गाथाएँ इन प्रतीकों को सबल बनाती है। पौराणिक गाथाएँ अध्यात्मिक शक्ति के चमत्कार को दर्शाकर व्यक्ति को विश्वास दिलाती है कि इस शक्ति के प्रसन्न होने पर सुख की प्राप्ति होगी।

(4) धार्मिक क्रिया-कलाप (Religious Activities) :— धर्म का अपना एक अलग क्रिया-कलाप होता है जिसके माध्यम से अध्यात्मिक शक्ति के प्रति अपने विश्वास को अभिव्यक्त करता

है। जैसे - मन्दिरों, चर्चों, गुरुद्वारों और मस्जिदों में व्यक्ति द्वारा नतमस्तक होना, ईश्वर का गुणगान करना, आत्म संयम, शारीरिक कष्ट और कर्मकाण्डों द्वारा ईश्वर को प्रसन्न करना, तीर्थ स्थानों की यात्रा करना आदि। ऐसा विश्वास किया जाता है कि धार्मिक क्रिया - कलाप की सफलता से ही मानव आध्यात्मिक शान्ति का लाभ पा सकता है।

(5) धार्मिक संस्तरण (Religious Hierarchy) :-
धार्मिक क्रिया कलापों के सन्दर्भ में संस्तरण देखा जाता है। जिन व्यक्तियों को धार्मिक क्रियाओं में विशेष अधिकार होते है उनकी स्थिति सबसे ऊँची होती है। जैसे - हिन्दु धर्म में पण्डित, पुजारी आदि। चर्च में फादर और मस्जिद में मुल्ला आदि की स्थिति। उसके बाद का स्थान उन व्यक्तियों को मिलता है जो धार्मिक प्रतिनिधियों में विश्वास रखते है। तीसरा स्थान धर्म में विश्वास रखने वालों का होता है। अन्त में वे आते है जो धर्म या धार्मिक क्रिया - कलापों से जुड़े नहीं होते है।

(6) धार्मिक निषेध (Religious Taboos) :-
धर्म का एक महत्वपूर्ण लक्षण है वह व्यक्ति को नहीं करने का आदेश देता है। जैसे - बेईमानी, दुराचरण, व्यभिचार, छल आदि से अलग रहने का आदेश देता है। इसे ही धार्मिक निषेध कहा जाता है। इस प्रकार का निषेध प्रत्येक धर्म की विशेषता है